राजकीय संग्रहालय झाँसी में संगृहीत सिक्कों का कलात्मक अध्ययन

डी0ई0आई0 डीम्ड विश्वविद्यालय, दयालबाग़, आगरा से चित्रकला में शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

शोध निर्देशिका :

डॉ0 नमिता त्यागी
असिस्टेंट प्रोफेसर
.ड्राइंग एण्ड पेन्टिंग विभाग
कला संकाय
डी0ई0आई0, डीम्ड यूनिवर्सिटी
दयालबाग़, आगरा

शोध छात्रा :

रीता शर्मा
ड्राइंग एण्ड पेन्टिंग विभाग
कला संकाय
डी0ई0आई0, डीम्ड यूनिवर्सिटी
दयालबाग़, आगरा

विभागाध्यक्ष की संस्तुति हेतु :

प्रो0 रागनी रॉय,
अध्यक्ष,. ड्राइंग एण्ड पेन्टिंग विभाग
कला संकाय
डी0ई0आई0, डीम्ड यूनिवर्सिटी
दयालबाग़, आगरा

संकाय प्रमुख की संस्तुति हेतुः

प्रो0 उर्मिला आनन्द,
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
डी0ई0आई0, डीम्ड यूनिवर्सिटी
दयालबाग़, आगरा

2013

''राजकीय संग्रहालय झाँसी में संगृहीत सिक्कों का कलात्मक अध्ययन''

विषय–वस्तु

शोध संकल्पना

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

परिकल्पना

उद्देश्य

चर–
1. संगृहीत सिक्के
2. संग्रहालय के प्रबन्धक एवं सहायक
3. कला समीक्षक
4. संग्रहालय
5. टकसाल

कार्य प्रणाली–

1.अनुसन्धान अभिकल्प

2.प्रदत्त संकलन

- प्राथमिक स्त्रोत
- द्वितीयक स्त्रोत

3.प्रतिदर्श आकार

4.साक्षात्कार

5.सीमा

निष्कर्ष

आधुनिक युग में अध्ययन की प्रसांगिकता

सामग्री

शोध संकल्पना :—

प्राचीन कला अवशेषों की अमूल्य निधि संजोय भारत की कलात्मक दृष्टि अत्यन्त विस्तृत रही है। भारतीय कला अवशेषों में मूर्ति कला, स्थापत्य कला, चित्रकला के साथ—साथ प्राचीन गुहा चित्र शवों के साथ दफनायें गये पात्र मिटटी के बर्तन, पत्थर काँसे की मूर्तियाँ और मृण्यमूर्तियाँ, मुद्राओं और टिकरों पर की गयी चित्रकारी आदि सम्मिलित होते हैं। इन प्राचीन अवशेषों में हड़प्पा एवं मोहनजादड़ो के नगर विन्यास की विस्तृत एवं समृद्ध योजना भी महत्वपूर्ण है। हड़प्पा के टीलों का ज्ञान 1878 ई0 में कनिंघम के द्वारा छपवायी गई कुछ मोहरों के माध्यम से हुआ।

भारतीय कला क्षेत्र के इन प्राचीन अवशेषों में से विभिन्न स्थानों से प्राप्त प्रचलित मुद्राओं का भी महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय संस्कृति की विश्वस्त गरिमा इन्ही मुद्राओं की देन है।

सिक्के हमें, इतिहास और संस्कृति को ठीक से समझने मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। सिक्के निर्जीव होते हुए भी हमारे सामने अतीत को दिखाते हैं। वे मूक नहीं होते वे बोलते हैं। वह अपने समय की सभ्यता, संस्कृति और कला की जानकारी देते हैं। सिक्के हमारे ज्ञान भण्डार में वृद्धि करते हैं।

प्राचीनतम काल में विनिमय की प्रक्रिया वस्तुओं के माध्यम से पूर्ण होती थी। आदिम अवस्था को पार करके जब मनुष्य ने सामाजिक जीवन में पदार्पण किया तब से यह प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। समय के साथ विकसित होती हुई यह प्रक्रिया सिक्कों के रूप में प्रयोग की जाने लगी।

सिक्कों पर कलात्मक प्रतीक चिह्न का प्रारम्भ आहत सिक्कों से माना जाता है। ये सिक्के विभिन्न धातु के तथा समय के साथ साथ इनमें परिवर्तन होना प्रारम्भ हो गया था। अलग—अलग राजाओं ने अपने राज्य के विभिन्न प्रकार एंव भिन्न—भिन्न धातुओं के सिक्के निर्मित किये। इन पर ठप्पों से चिह्न उत्पादित किये जाते थे। कालान्तर में यह प्रक्रिया कला का रूप ले चुकी थी, क्योंकि मुद्राओं पर अंकित चिह्न रूप देखने में सुन्दर है।

आहत सिक्कों पर अंकित चिह्नों को अलग–अलग समूहों में विभाजित किया जा सकता है–1. मनुष्य की आकृति 2. युद्ध के हथियार, स्तूप, चैत्य आदि। 3. वृक्ष, नदी, पर्वत, सरोवर आदि। 4. पशु–पक्षी 5. शिव–पूजा से सम्बन्धित प्रतीक अथवा तांत्रिक चिह्न 6. मांगलिक चिह्न 7. विचित्र चिह्न 8. पूजा प्रतीक चिह्न आदि।

अलग–अलग स्थानों पर विभिन्न शासकों के टकसाल (मिन्ट) प्राप्त होते हैं। ग्वालियर, झाँसी, धुबेला आदि मे भी टकसाल (मिन्ट) प्राप्त हुए हैं। जिनमें सिक्कों की उपयोगिता के साक्ष्य प्राप्त होते हैं।

प्राचीन काल के एवं राजाओं के यह सिक्के आज भी देश के विभिन्न संग्रहालयों में संगृहीत हैं। मेरे विषय के क्षेत्रानुसार बुन्देलखण्ड क्षेत्र के विभिन्न संग्रहालय, जैसे–राजकीय संग्रहालय झाँसी, राजकीय संग्रहालय धुबेला, गुजरी महल संग्रहालय ग्वालियर, पुरात्तव संग्रहालय ओरछा, दतिया, सागर आदि में सिक्कों का संग्रह प्राप्त होता है।

बुन्देलखण्ड का क्षेत्र उ0प्र0 एंव म0प्र0 के जनपदों को जोड़े हुए है जिसमें उ0प्र0 का झाँसी जिला भी सम्मिलित है। झाँसी जिले को बुन्देलखण्ड में विशिष्ट स्थान प्राप्त है। जो झाँसी जिले में स्थित है, जिसकी स्थापना 1978 ई0 में हुई थी। संग्रहालय में संगृहीत अनुपम वस्तुऐं एवं विशिष्ट चित्र अपनी एक अलग पहचान बताते हैं। राजकीय संग्रहालय झाँसी में औजार, मूर्तियाँ, वस्त्र, चन्देल कालीन चित्र, गुप्त कालीन चित्र, टेराकोटा–काँसे की मूर्तियाँ, पाण्डुलिपियाँ, एंव सिक्कों का संग्रह प्राप्त होता है।

शोध कार्य के विषयानुसार (राजकीय संग्रहालय झाँसी में संगृहीत सिक्कों का कलात्मक अध्ययन) संग्रहालय में प्राचीन राजवंशों, जनपदों एवं मुगलकाल से लेकर ईस्ट इण्डिया कम्पनी तक के सिक्कों का अनुपम संग्रह है। यह कलात्मक अध्ययन रोचक होने के साथ–साथ गम्भीर विषय भी है। सिक्कों में विकास का यह कार्य पंचमार्क या आह

सिक्कों से प्राप्त होता है। मुहम्मद तुगलक ने चमड़े के सिक्के भी चलाये थे एवं मुस्लिम शासकों के सिक्कों पर उनके शासन काल का समय भी मिलता है।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन– हमारी प्राचीन धरोहर मृतप्रायः नहीं है अपितु वे अतीत के सम्बन्ध में हमारा मार्गदर्शन करती हैं तथा उस समय विशेष की सांस्कृतिक, राजनैतिक, भौगोलिक, सामाजिक एवं कलात्मक स्वरुप की पूर्ण व्याख्या करती है। विभिन्न संग्रहालयों में संगृहीत चित्रों, मूर्तियों एवं अन्य वस्तुओं के माध्यम से हमें प्राचीन काल के समय विशेष के बारे जानकारी प्राप्त हाती है, जिनमें उस समय के प्रचलित सिक्के भी महत्वपूर्ण रुप से उपयोगिता के साथ–साथ कलात्मक स्वरुप को प्रदर्शित करते हैं। मैनें अपने शोध विषय चयन हेतु विभिन्न संग्रहालयों का भम्रण किया एवं संग्रहालयों में संगृहीत कलात्मक वस्तुओं से अत्यन्त प्रभावित हुई। मैनें राजकीय संग्रहालय मथुरा एवं गुजरी महल ग्वालियर का भ्रमण भी किया। जहाँ मैनें अन्य वस्तुओं के साथ–साथ संगृहीत सिक्कों का आकर्षक संग्रह देखा जिनमें सोने, चाँदी, ताबाँ, सीसा आदि धातुओं के सिक्के संग्रहीत थे। संग्रहालय के भ्रमण के दौरान मुझे राजकीय संग्रहालय मथुरा एवं राजकीय संग्रहालय झाँसी के अध्यक्ष श्रीमान् ए.के. पाण्डेय तथा डॉ. ऊषा पाराशर से अपने शोध विषय से समबन्धित सहायता प्राप्त हुयी।

. राजकीय संग्रहालय झाँसी में संगृहीत चित्र, मूर्तियाँ एवं अन्य वस्तुऐं अत्यन्त प्रभावशाली हैं। परन्तु संग्रहालय में संग्रहीत सिक्कों के कैटलॉग से अत्यन्त प्रभावित हुई। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक के सिक्कों का संग्रह है जिन पर अंकित विभिन्न प्रकार के प्रतीक चिह्न, पेड़–पौधे, राजा–रानी के चित्र, देवी–देवताओं के चित्र एवं मुगल कालीन सिक्कों पर राजा का नाम व समय अंकित होना अत्यन्त प्रभावजनक है। मैनें **अजीत रायज़दा** की **भारतीय सिक्कों का इतिहास** एवं **राम प्रकाश ओझा** की **प्राचीन सिक्के** पुस्तक का गहन अध्ययन किया इन पुस्तकों के माध्यम से सिक्कों की ऐतिहासिकता व प्राचीनता की जानकारी प्राप्त होती है। राजकीय संग्रहालय में संगृहीत सिक्के क्योंकि प्राचीन काल से आधुनिक काल तक के प्राप्त हाते हैं जिनके फलस्वरुप मैं उन सिक्कों की ऐतिहासिकता के साथ उनके कलात्मक स्वरुप के विकास को प्रदर्शित कर सकूँगी। सिक्कों के कलात्मक पक्ष के साथ उनकी तकनीक के विकास क्रम पर कार्य करना इस शोध कार्य का प्रथम उद्देश्य रहेगा।

सिक्कों पर अधिकतर पुस्तकें अलग–अलग साम्राज्यों या काल पर लिखी गयी हैं। **Devendera Handa** की पुस्तक **Early Indian coins from sugh, Sanjay Garg** की पुस्तक **Coins & History of Medieval India** इन पुस्तकों में एक समय सीमा पर आधारित सिक्कों का अध्ययन हैं मेरे शोध कार्य के माध्यम से संग्रहालय में संगृहीत प्राचीन आहत सिक्कों से लेकर ब्रिटिश काल तक के सिक्कों की ऐतिहासिकता, कलात्मकता एवं तकनीकी पक्ष पर जानकारी प्राप्त होगी।

राजकीय संग्रहालय भोपाल के भ्रमण के दौरान प्राप्त कैटलॉग से भी मुझे सिक्कों की विभिन्नताओं के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। सिक्कों पर आधारित विभिन्न पुस्तकों, कैटलॉग, लेख, एवं वेब साइट्स के माध्यम से मुझे अपने शोध कार्य की रुपरेखा तैयार करने में सहायता प्राप्त हुई हैं।

परिकल्पना– किसी शोध कार्य को शुरू करने से पहले शोध कार्य मे सफलता हेतु शोध की परिकल्पना का साँचा तैयार करना अति आवश्यक होता है। प्राचीनता की जड़ों पर नवल पत्र धारण कर एक सुन्दर एवं विशाल नवीन वृक्ष का निर्माण होता है उसी प्रकार भारतीय प्राचीन कलात्मक धरोहर हमें इस क्षेत्र की अपूर्व जानकारी तो देती ही है साथ ही हमारे संज्ञान को पुष्ट करती हुयी नयी विचार चेतना भी प्रदान करती है। इस शोध का उद्देश्य इन प्राचीन राजवंशो की गौरवपूर्ण थाती को उनके कलापूर्ण प्रचलित सिक्कों के माध्यम से सबके समक्ष प्रस्तुत करना है। ये सिक्के अपनी उपयोगिता के साथ–साथ कलात्मक–दृष्टि से भी अत्यन्त समृद्ध है जिन पर अंकित विभिन्न कलात्मक आकृतियाँ उस समय विशेष सन्दर्भ में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती है। इस शोध के माध्यम से सिक्कों के कलात्मक पहलू की ओर अधिक प्रकाश डाला जायेगा।

उद्देश्य – शोध कार्य के विषयानुसार ''राजकीय संग्रहालय झाँसी में संग्रहीत सिक्कों का कलात्मक अध्ययन'' सिक्कों के अध्ययन के फलस्वरूप मेरे शोधकार्य के प्रमुख उद्देश्य एवं विशेषताएँ निम्नलिखित हैं –

- सिक्कों की प्राचीनता, उपयोगिता एवं महत्व

- प्राचीन काल से आधुनिक काल तक संग्रहालय में सगृहीत सिक्कों का ऐतिहासिक एवं कलात्मक अध्ययन
- संगृहीत सिक्कों की सांस्कृतिक परिवेश में भूमिका
- सिक्कों की तकनीक 1. आहत पद्धति
  2. ढलुआ पद्धति
  3. ठप्पा पद्धति
- संगृहीत सिक्कों का कलात्मक रूप से तुलनात्मक अध्ययन

चर– 1. संगृहीत सिक्के

2. संग्रहालय के प्रबन्धक एवं सहायक

3. कला समीक्षक

4. संग्रहालय

5 टकसाल

कार्य प्रणाली–

1. **अनुसन्धान अभिकल्प–** इस शोध कार्य का अध्ययन संगृहीत सिक्कों से सम्बन्धित वर्णात्मक अनुसन्धान पर आधारित है।

2. **प्रदत्त संकलन –** प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोत

- **प्राथमिक स्त्रोत** – राजकीय संग्रहालय झाँसी में संगृहीत प्राचीन राजवंशों, जनपदों एवं साम्राज्यों के राजाओं द्वारा निर्मित किये गये काँसे, ताँबे, सोने एवं चाँदी के वास्तविक सिक्के एवं साक्षात्कार
- **द्वितीयक स्त्रोत** – पुस्तकें, प्रकाशित–पत्र, पत्रिकाएँ, समाचार–पत्र, कैटलॉग, वेबसाइट्स एवं संग्रहालयों के भ्रमण आदि।

3 . **प्रतिदर्श आकार –** 250 संगृहीत सिक्के

4. साक्षात्कार – विभिन्न संग्रहालयों के प्रबन्धकों एवं उप प्रबन्धकों से सम्पर्क

5. सीमा – प्रत्येक शोध कार्य अपनी एक सीमा पर आधारित होता है तथा प्रत्येक शोधार्थी कुछ सीमाओं के अन्तर्गत अपना शोध कार्य पूरा करते हैं। समय सीमा को ध्यान में रखते हुए इसमें मैंने राजकीय संग्रहालय झाँसी में संगृहीत प्राचीन काल से ब्रिटिश काल तक के सिक्कों का चयन किया है।

निष्कर्ष– हमारी प्राचीन धरोहर उस समय की प्रत्येक कलात्मक संस्कृति की आधार शिला को हमारे समक्ष प्रस्तुत करती है। सिक्कों के कलात्मक अध्ययन के माध्यम से कला की प्राचीनता व उपयोगिता को अधिक से अधिक आधुनिक परिवेश में प्रर्दशित करना है।

आधुनिक युग में अध्ययन की प्रसांगिकता – प्राचीन वस्तुओं से हमें उस समय होने वाली प्रत्येक ऐतिहासिक, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक प्रतिक्रियाओं की जानकारी प्राप्त होती है। सिक्कों पर अंकित चित्र उस समय की ऐतिहासिकता के साथ–साथ कला एवं संस्कृति को हमारे समक्ष प्रस्तुत करती है। हमारे आधुनिक परिवेश में भारतीय कला एवं संस्कृति का विशेष महत्व रहा है। इन प्राचीन सिक्कों से प्राचीन काल की कला एवं संस्कृति भी प्रदर्शित होती है।

''राजकीय संग्रहालय झाँसी में संगृहीत सिक्कों का कलात्मक अध्ययन''

(विषय–वस्तु)

भूमिका : प्राचीन भारतीय मुद्रा की उत्पत्ति, विकास एंव महत्व

प्रथम अध्याय – ''राजकीय संग्रहालय झाँसी''

1.1 ''राजकीय संग्रहालय झाँसी'' की स्थापना एवं विकास क्रम।

1.2 संगृहालय में संगृहीत कलात्मक वस्तुएँ।

द्वितीय अध्याय – संगृहीत लगभग छठवीं शताब्दी ई0पू0 से पहली शताब्दी ई0 के सिक्के एवं उनका कलात्मक विश्लेषण – (कलात्मक स्वरूप, धातु एवं आकार)

2.1 साम्राज्यवादी चाँदी एवं ताँबे के आहत सिक्के

2.2 उत्तर मौर्यकाल

2.2.1 मुगमुखा, एरन, एरिकच्छ, कौशाम्बी,

2.2.2 पांचाल, विदिशा, अयोध्या, मालवा

तृतीय अध्याय – संगृहीत दूसरी शताब्दी ई0पू0 से तीसरी ई0 के सिक्के एवं उनका कलात्मक विश्लेषण (कला स्वरूप, धातु–आकार एवं लिपि)

3.1 हिन्द यवन काल

3.2 कुषाण काल

3.3 पश्चिमी (वेस्टर्न) क्षत्रप

चतुर्थ अध्याय – संगृहीत चौथी ई0 से दसवीं ई0 के सिक्के एवं उनक कलात्मक विश्लेषण (कला स्वरूप, धातु–आकार एवं लिपि)

4.1 गुप्त काल

4.2 इंडो–सेसियन

4.3 गुर्जर प्रतिहार

4.4 कल्चुरि

पंचम् अध्याय – संगृहीत ग्याहरवीं ई0 से उन्नीसवीं ई0 के सिक्के एवं उनका कलात्मक विश्लेषण (कला स्वरूप, धातु–आकार एवं लिपि)

5.1 भारत के विभिन्न राजवंश

5.1.1 तोमर

5.1.2 गढ़वाल

5.1.3 चन्देल

5.1.4 यादव

5.1.5 चौहान

5.2 दिल्ली सल्तनत, बंगाल सल्तनत, मालवा सल्तनत

5.3 सूरी

5.4 मुगल

षष्ठम् अध्याय– संगृहीत सिक्कों की तकनीकी एवं शैलीगत विशेषताएँ

6.1 तकनीकी वर्गीकरण

6.1.1 आहत पद्धति

6.1.2 ढलुआ पद्धति

6.1.3 ठप्पा पद्धति

6.2 शैलीगत विशेषताएँ – सिक्कों के विकास क्रम के अनुसार

उपसंहार –

- सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
- छाया चित्र
- परिशिष्ट

सारांश

सिन्धुघाटी की चित्रमय मुहरें भारतीय कला के प्रथम जीवित प्रमाण हैं। इन मुद्राओं और टिकरों पर उकेरी गयी आकृतियाँ एवं अलंकरण लिपि आदि कला के उत्कृष्ट नमूने हैं।

भारत में सबसे प्राचीन सिक्के जो अब तक खुदाई में मिले हैं वे काषार्पण या कहापण के नाम से जाने जाते हैं जिन्हें आहत या पंचमार्क सिक्के भी कहते हैं। पंचमार्क सिक्कों पर ढप्पों से चिह्न अंकित कर दिये जाते थे। मोहनजोदड़ो से प्राप्त मोहरों पर पशुपति व नंदी के आकारों को उकेरा गया है जिन्हें हम पंचमार्क सिक्कों पर भी देखा जा सकता है। सूर्य और चन्द्रमा सिक्कों पर चिन्हित किये जाते थे विष्णुचक्र के समान षड्चक्र भी सिक्कों मे प्राप्त होतें हैं। प्रारम्भ मे सिक्कों के अग्रभाग पर ही चिह्न अंकित किये जाते थे बाद मे अग्रभाग एवं पृष्ठभाग दोनों में ही चिह्नों को अंकित किया जाने लगा।

आगे आते–आते सिक्कों में विकास के साथ अलग–अलग जनपदों, राजवंशों एवं साम्राज्यों के राजाओं के माध्यम से सिक्कों में प्रतीक चिह्नों के साथ–साथ उनके आराध्य देवी–देवताओं एवं राजा का नाम भी अंकित किया जाने लगा। लिपिकात्मक उत्कीर्णन में देवनागरी, खरोष्ठी एवं ब्राहमी लिपि थी। सिक्कों पर उत्कीर्ण आकृतियाँ अत्यन्त सुन्दर हैं। चंदेल एवं कल्चुरि के सिक्कों पर अंकित अग्रभाग पर बैठी हुयी देवी लक्ष्मी एवं पृष्ठभाग पर राजा का नाम अंकित होना सिक्कों में विभिन्ता को प्रदर्शित करता है। गुप्तकालीन राजाओं के सिक्कों पर राजा–रानी की उत्कीर्ण आकृतियाँ अत्यन्त प्रभावजनक हैं तथा मुगल कालीन सिक्कों पर राजा का नाम तथा समय भी अंकित किया गया है।

दिनाँक : **शोधार्थी :**

रीता शर्मा

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अल्तेकर, अनन्त सदाशिव : गुप्त कालीन मुद्राएँ, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, 1954 ई0.

2. अग्रवाल, वासुदेवशरण : भारतीय कला (प्रारम्भिक युग से तीसरी शताब्दी तक) पृथ्वी प्रकाशन, वाराणसी, 1966.

3. अग्रवाल, गिर्राज किशोर : शिल्प दर्शन, अशोक प्रकाशन, अलीगढ़, 2006.

4. ओझा, रामप्रकाश : प्राचीन सिक्के, पोस्ट ऑफिस महानगर, सीतापुर रोड, लखनऊ, 1978.

5. उपाध्याय, वासुदेव : प्राचीन भारतीय मुद्राएँ, प्रज्ञा प्रकाशन, पटना, 1971.

6. गुप्त, मोहन लाल चातक : बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास और सिक्के, राजकीय संग्रहालय, झाँसी, 2006.

7. गुणाकर, मुट्ढे शान्ति : भारतीय सिक्कों का इतिहास, राजकमल प्रकाशन.

8. द्विवेदी, प्रेमशंकर : भारतीय चित्रकला के विभिन्न आयाम, कला प्रकाशन, वाराणसी, 2007.

9. प्रकाश, श्याम : भारतीय एवं कला संस्कृति, प्रेस प्रिंटिंग प्रकाशन, राजामंडी, आगरा, 1966.

10. बाजपेयी, कृष्ण दत्त : बुन्देलखण्ड गौरव, खण्ड 1, प्रकाशन महेन्द्र कुमार मानव, अभिनन्दन समिति.

11. रायजादा, अजीत : भारतीय सिक्कों का इतिहास, शारदा पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1993.

12. राय, रामकुमार : भारतीय इतिहास के स्त्रोत सिक्के, चौखम्बा, विधाभवन, वाराणसी, 1966.

13. राव, राजवन्त, राव, प्रदीप कुमार : प्राचीन मुद्रा लिपि, मुद्रा एवं कला, चतुर्थ प्रकाशन, गोरखपुर, 1998.

14. वात्सयायन, सच्चिदानन्द : भारतीय कला दृष्टि, प्रभात प्रकाशन दिल्ली, 1985.

15. वर्मा, डॉ0 अविनाश– बहादुर : भारतीय चित्रकला का इतिहास, प्रकाश बुक डिपो, बरेली, 1968.

16. वर्मा, महेन्द्र : भारतीय चित्रकला परम्परा, भारत कला प्रदर्शन, दिल्ली, 2006.

17. सिंह मीनाक्षी : गुप्त युग, एक मुद्राशास्त्रीय अध्ययन, कला प्रकाशन, वाराणसी, 2006.

18. शुक्ल, जयकुमार : कन्नौज (कान्यकुब्ज) संस्कृति एवं पुरातत्व, बी0आर0 पब्लिशिंग कार्पोरेशन, दिल्ली, 2009.

19. शर्मा, रामकुमार : कल्चुरिवंश और उनका युग खण्ड – 2, आर्यन बुक इण्टरनेशनल, नई दिल्ली, 1988.

BIBLOGRAPHY

1. Allan, John : Coins of the Gupta Dynasties and Sansanka king of Gouda, Publishing by- Oriental Books Reprint, New Delhi, 1975.

2. Cunningham : Coins of Ancient India, Intological Book House Bansphatak, Varanasi, 1963.

3. Dehayia, Vidya : Indian Art, Phaion Press, Ltd., 1997.

4. Garg, Sanjay : Coins & History of Medieval India, Rahul Publishing House, Delhi, 1997.

5. Goyal, S.R : An Introduction to Gupta Numismatics, Kusmanjali Prakashan, Jodhpur, 1997.

6. Handa, Devendra : Early Indian Coins From Sugah, Sandeep Prakashan, New Delhi, 1996.

7. Handa, Devendra : Trebal Coins of Ancient India, Aryan Books International, New Delhi, 2007.

8. Majumdar,R.C. : The Mughal Empire, Bhartiya Vidya Bhavan,1974.

9.Osamu, Takat : The Art of india, Publishing by National Keizal Shimoum.

10. Pool,Stanley Lane : Coins & Madals- Their Place in History and Art, Cosmo Publications,1885.

11. Rapson, E.J. : Sourceo of Indian History Coins,The Chokhambha Vidya Bhavan, Varanasi.

12. Shrava, Satya : The Kushan Numismatics, Pranava Prakashn, May,1985.

13. Singh, Arvind k. : Coins of Great Kushan, Parimal Publication Delhi,1996.

14.Smith, Vencent A. : Coins of Anciant India (Catalogue of the Coins in the Indian Museum Calcutta),Intological Book House, Vranashi,1992.

INTERNET

- en,Wikipedia.org/wiki/Jhansi
- en,Wikipedia.org/wiki/bundalkhand
- www.governemntmesuemjhansi.com
- www.ignca,nic.in/coinage
- www.bharatcoins.com/indiacoinsrareindiancoins.com
- www.rbi.org.in/ancient.html
- http://www.flicker.coinscollection
- http://www.coinscollcetion
- http://www.guptahistory

दस्तावेज

- राजकीय संग्रहालय झाँसी से प्राप्त दस्तावेज

भारत का मानचित्र

बुन्देलखण्ड का मानचित्र

कोसल जनपद, आहत रजत मुद्रा, राजा गंगयदेव (छठी से चौथी ई0पू0)

वजन 4.55 ग्राम, आकार 26×25 मिमी0

हिन्द यवन काल की रजत मुद्रा, राजा अपोलो डोटस द्वितीय (110–80 ई0पू0)

वजन 2.02 ग्राम, आकार 16×15 मिमी0

कल्चुरि राजवंश की स्वर्ण मुद्रा, राजा गंगदेव (1015–1040 ई0पू0)

वजन 4.07 ग्राम, आकार 19 मिमी0

मालवा सल्तनत की स्वर्ण मुद्रा, राजा घियास शाह (1469–1500 ई0)

वजन 10.51 ग्राम, आकार 20×21 मिमी0

गुप्त काल की स्वर्ण मुद्रा (350–375 ई0)

वजन 7.59 ग्राम, आकार 19 मिमी0

कुषाण काल की स्वर्ण मुद्रा, राजा हूविष्क (126–164 ई0)

वजन 7.82ग्राम, आकार 21 मिमी0